वर्ष 7, अंक 4 दिसम्बर 2014

हंसध्वनि

गृह पत्रिका

पवन हंस लिमिटेड

सिंहावलोकन विशेषांक

FLY FOR YOU

स्वच्छ भारत

वर्ष 7 अंक 4

हंसध्वनि

गृह पत्रिका

संपादक
आर बी कुशवाहा
स्था. महाप्रबंधक (का एवं मासेवि)

संपादक मंडल
राम कृष्ण
निगम मामले

रजनीश कुमार सिन्हा
अधिकारी (राजभाषा/निगम मामले)

संपादक सहयोग
रेखा रानी
आशुलिपिक टंकक (हिंदी)

संपादकीय कार्यालय
पवन हंस लिमिटेड
सी-14 सेक्टर-1
नोएडा 201301
दूरभाष: 0120 2476734
ई-मेल: corp.affairs@pawanhans.co.in
rajbhasha.ol@pawanhans.co.in

हंसध्वनि में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं और उन विचारों से पवन हंस लिमिटेड की सहमति आवश्यक नहीं है।

आंतरिक वितरण के उद्देश्य से खरी कसौटी प्रकाशन लखनऊ द्वारा प्रकाशित एवं के सी प्रकाशन प्रा.लि. के मुद्रण सहयोग से पवन हंस लिमिटेड द्वारा प्रकाशित

इस अंक में...

पृष्ठ संख्या	शीर्षक
04	संपादकीय
05	पुरस्कार व उपलब्धियां
09	सोशल सर्किट
	(कोई-कोई, बोये जाते है बेटे, कर्म किये जा, क्या खूब कहा)
10	पवन हंस लिमिटेड की फेसबुक पर उपस्थिति
11	पवन हंस अगम्य ऊँचाई पर
12	हिंदी दिवस/ पखवाड़ा प्रतियोगिता
16	प्रफुल्लता
17	जंगल का रोमांच
18	रोहिणी रिपोर्ट
20	अशुभ भी हो सकता है पैतृक मकान
21	वर्ष 2015 के लिए अवकाश
22	जांच बिन्दु

संपादकीय

मित्रो, आप सभी के समक्ष गृह पत्रिका हंसध्वनि के नए अंक को सिंहावलोकन विशेषांक के रूप में प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

वर्ष 2014 हमारे लिए अनेक नए परिवर्तनों का कारक रहा। कंपनी के द्वारा अनेक नई पहलों और अनेक नवीन गतिविधियों की शुरूआत की गई। इन नवीन पहलों और साहसी शुरूआत के उत्साहवर्धक परिणाम रहे और कंपनी की लाभप्रदता में वृद्धि हुई। कंपनी लाभांश प्रदान करने में सक्षम सिद्ध हुई। चल रही परियोजनाओं को नई गति व ऊर्जा मिली।

इस अंक में विशेष रूप से नागर विमानन मंत्रालय की महत्वाकांक्षी परियोजना रोहिणी हेलीपोर्ट, जिसका निर्माण पवन हंस द्वारा कराया जा रहा है पर आधारित सामग्री रोहिणी रिपोर्ट के नाम से प्रस्तुत की जा रही है साथ ही वर्ष 2014 के दौरान अर्जित उपलब्धियों को समर्पित एक विशेष आलेख वार्षिक समीक्षा व सिंहावलोकन के रूप में आपको प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस अंक में हम हिंदी पखवाड़े की प्रतियोगिताओं में भागीदारी प्रदर्शित करने वाले कर्मचारियों की सूची भी प्रकाशित कर रहे हैं। प्रतिभागिता प्रदर्शित करने वाले प्रत्येक कर्मचारी को हंसध्वनि टीम की तरफ से हार्दिक धन्यवाद। आपकी प्रतिभागिता और राजभाषा के प्रति समर्पण के दम पर हमें नागर विमानन मंत्रालय से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही आपकी गृह पत्रिका हंसध्वनि को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

नए वर्ष की बेला में यह सही अर्थों में अपनी पीठ थपथपाने के साथ नई शुरूआत का संकेत दे रहा है। आपके फीडबैक व बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा में।

शुभकामनाओं सहित।

आपका

(आर.बी. कुशवाहा)

पुरस्कार व उपलब्धियां

श्री रामकृष्ण

पवन हंस लिमिटेड के निगम मामला विभाग व राजभाषा विभाग के समन्वय से जारी होने वाली गृह पत्रिका हंसध्वनि को नागर विमानन मंत्रालय की हिंदी पखवाड़ा की प्रतियोगिताओं में तृतीय पुरस्कार प्राप्त होना एक अद्भुत उपलब्धि है। विगत वर्ष के सपने का साकार होना अनेक नए संकल्पों को जन्म देता है। वस्तुतः गृह पत्रिका के इस अंक के लिए उपलब्धियां गिनवाना अत्यंत ही रोमांचकारी प्रतीत हो रहा है। वर्ष 2014 हमारे लिए अवसरों व उपलब्धियों से भरा रहा। पवन हंस ने परिचालनगत उत्कृष्टता पुरस्कार के साथ ही सतत कारोबारी प्रदर्शन पुरस्कार सहित प्रतिष्ठित पुरस्कारों को हासिल किया। अपने कोर बिजनेस से जुड़े पुरस्कारों के साथ ही संवैधानिक दायित्वों के उत्कृष्ट निर्वहन के लिए प्रदत्त राजभाषा पुरस्कार के कारण हमारी छवि में अत्यंत ही निखार हुआ। वर्ष की शुरूआत न्यूज इंक लीजेंड पी एस यू शाइनिंग अवार्ड 2013 के साथ हुई। कारोबारी विविधता के मानकों पर सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर पवन हंस को इस प्रतिष्ठित पुरस्कार की प्राप्ति हुई।

परिचालनगत उत्कृष्ठता के मानकों पर स्वर्णिम प्रदर्शन के कारण आईआईआईई के द्वारा 18वें सीईओ सम्मेलन में पवन हंस को परिचालनगत उत्कृष्ठता पुरस्कार प्राप्त हुआ। गोल्डेन कैटेगरी में पवन हंस को यह पुरस्कार पदमश्री व पदमभूषण डॉ. ए. सिवयनु पिल्लई के कर कमलों से प्राप्त हुआ। श्री पिल्लई ब्रह्मोस एयरोस्पेस के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी हैं। दिनांक 04 जुलाई 2014 को दिये गये इस पुरस्कार को वर्ष 2012-13 के दौरान संगठन के समग्र प्रभावोत्पादकता के आधार पर दिया गया। वस्तुतः विगत वर्षों में पवन हंस में उत्पादकता व राजस्व सृजन पर मुख्य जोर रहा और आमूलचूल बदलाव के लिए उच्च प्रबंधतंत्र ने निरंतर प्रयास किए।

निरंतर प्रयासों की सार्थक परिणिति के रूप में सेवा क्षेत्र के लोक उपक्रम के रूप में हाइएस्ट टर्न अराउण्ड परफार्मेंस के अंतर्गत पीएसयू समिट 2014 में अरुणाचल प्रदेश के माननीय शिक्षा, पुस्तकालय, वस्त्र, हस्तकरघा व हस्तशिल्प मंत्री श्री तपांग तलोह से प्राप्त पुरस्कार द्वारा पूर्वोत्तर में हमारी स्थिति सुदृढ़ हुई। वर्ष 2011-12 के दौरान पूर्वोत्तर में हुई दुर्घटनाओं से पवन हंस की धूमिल छवि को बेहतर बनाने के लिए किए प्रयासों की सार्थक परिणति इन पुरस्कारों के हासिल होने से हुई। एक अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कार हमें सुश्री निर्मला सीतारामन माननीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), वित्त एवं निगम मामले के कर कमलों से हासिल हुआ। वर्ष 2014 के लिए स्टेबिलिटी के लिए गोल्डेन पीकॉक पुरस्कार की प्राप्ति से हमें सतत विकास पथ पर आगे बढ़ने हेतु भरपूर प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है। पुरस्कारों की विविधतापूर्ण कोटि हमारी विविधतापूर्ण सेवाओं के प्रति जनसमर्थन की अभिव्यक्ति है। पुरस्कारों की प्राप्ति हमें जिम्मेदारियों का एहसास कराती है साथ ही हमारे मनोबल को भी बढ़ाने में सहायक बनती है।

जिम्मेदारियों के एहसास व मनोबल को बढ़ाने वाले एक अन्य पुरस्कार की प्राप्ति हमें स्कॉच रेनेसा अवार्ड के रूप में हुई। माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री एम वेंकैया नायडू व अध्यक्ष भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग श्री अशोक चावला के हाथों प्रदत्त स्कॉच रेनेसा अवार्ड हेलीकॉप्टर परिवहन सेवाओं के लिए भारत की सर्वोत्तम परियोजनाएं 2014 श्रेणी में प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार हमारे संतुलित कारोबारी प्रदर्शन और मार्केट लीडरशिप की स्थिति को हासिल करने के कारण हमें प्रदान किया गया।

वर्ष के उत्तरार्ध में हमें क्रमशः नागर विमानन मंत्रालय से हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले कार्यालय के रूप में प्रथम पुरस्कार स्वरूप शील्ड की प्राप्ति हुई साथ ही हमारी गृह पत्रिका हंसध्वनि को भी तृतीय पुरस्कार मिला। हमारी कामना है कि राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्राप्त शील्ड को पवन हंस प्रतिवर्ष हासिल करे व पत्रिका की कोटि में उन्नयन के साथ पुरस्कार की कोटि भी उन्नयित हो।

एक और उल्लेखनीय पुरस्कार हमें अमेरिकन हेलीकाप्टर सोसायटी (एएचएस) से प्राप्त हुआ। यह उल्लेखनीय इस कारण है कि यह हमें उत्तराखंड त्रासदी के दौरान 20000 से अधिक लोगों की जान बचाने और 500 टन से अधिक की राहत सामग्री बाढ़ प्रभावित लोगों तक पहुंचाने के लिए प्रदान किया गया। एएचएस द्वारा प्रदत्त कैप्टन विलियम जे कोस्लर अवार्ड पुरस्कार से बढ़कर सामाजिक स्वीकारोक्ति है।

जब विकास के संबंध में चर्चा होती है तो प्रायः इस बात पर विचार होता है कि सकारात्मक परिवर्तन मूलतः दंडात्मक प्रक्रिया या पुरस्कार प्रदान करने के माध्यम से नियमित निर्धारित होते हैं। तकनीकी रूप में इसे कहा जाता है कि किसी भी परिप्रेक्ष्य में वांछित बदलाव प्राइज या पनिश्मेंट के माध्यम से आ सकते हैं। प्राइज किसी भी प्रकार के पनिश्मेंट से आने वाले बदलावों से सबसे अच्छा है। वस्तुतः पुरस्कार हमें कर्तव्यों का एहसास कराने के साथ हमें प्रोत्साहित करते हैं। भावी चुनौतियों का सामना करने के सक्षम बनाते हैं। पवन हंस में हम जिस प्रकार टीम वर्क की भावना के साथ कार्य करते हैं, पुरस्कारों के प्रति हमारी टीम के मनोबल को ऊंचा उठाती है।

नए वर्ष में भी निगम मामला विभाग की कामना है कि हम पवन हंस के लिए उत्कृष्ठ पुरस्कार हासिल करें।

राम कृष्ण
प्रबंधक (निगम मामले)

नागर विमानन मंत्रालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पवन हंस लिमिटेड को प्रथम पुरस्कार के रूप में राजभाषा शील्ड व गृह पत्रिका हेतु तृतीय पुरस्कार

दिनांक 28.11.2014 को नागर विमानन मंत्रालय के नियंत्रणाधीन कार्यालयों उपक्रमों द्वारा हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने की कोटि में पवन हंस लिमिटेड को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है व पुरस्कार के रूप में शील्ड प्रदान किया गया। नागर विमानन मंत्रालय के अधीनवर्ती कार्यालयों उपक्रमों की गृह पत्रिकाओं की कोटि में भी पवन हंस को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। सफदरगंज एयरपोर्ट स्थित राजीव गांधी भवन के द्वितीय तल पर स्थित नागर विमानन मंत्रालय के सम्मेलन कक्ष में सचिव, नागर विमानन मंत्रालय श्री वी. सोमसुंदरन द्वारा प्रदत्त इस शील्ड को पवन हंस लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अनिल श्रीवास्तव, भा.प्र.से. के नेतृत्व में हिंदी अधिकारी द्वारा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों सहित संयुक्त रूप से ग्रहण किया गया।

पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां।

इस प्रकार का पुरस्कार पवन हंस को पहली बार प्राप्त हुआ है और यह राजभाषा कर्मियों द्वारा पूरी लगन व ईमानदारी से तन्मयतापूर्वक की गई सेवा के कारण हासिल हुआ है। वेबसाइट के द्विभाषीकरण सहित धारा 3 (3) के प्रत्येक प्रपत्र का समय अनुवाद व वार्षिक रिपोर्ट तथा लोक उपक्रम समिति को प्रस्तुत किये जाने वाले प्रपत्रों को द्विभाषी रूप में प्रस्तुत किया जाना राजभाषा कर्मिकों के श्रमसाध्य सत्प्रयासों के बिना असंभव है। पवन हंस की निरंतर प्रगति व लाभप्रदता के साथ ही लाभांश प्रदाता की छवि के मध्य राजभाषा अनुभाग के अत्यंत सीमित मानव संसाधन के दम पर पवन हंस द्वारा नागर विमानन मंत्रालय से हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले कार्यालय का शील्ड प्राप्त किया जाना उत्साहवर्धक उपलब्धि है। राजभाषा संबंधी कार्यों के निष्पादन के कारण प्राप्त प्रथम पुरस्कार में राजभाषा कार्य से जुड़े निम्न कर्मिकों की सक्षम भूमिका के कारण यह संभव हुआ है:

1. सुश्री रेखा रानी, हिंदी आशुलिपिक टंककः प्रधान कार्यालय में पदस्थ सुश्री रेखा द्वारा द्विभाषी जारी होने वाले पत्रों के हिंदी टंकण के साथ राजभाषा अनुभाग द्वारा दैनिक आधार पर निष्पादित किए जाने वाले नियमित कार्यों, विभिन्न रिपोर्टों को तैयार करना व उनका समय प्रेषण सुनिश्चित करने के साथ फाइलों के अनुरक्षण सहित पवन हंस की पत्रिका हंसध्वनि के संपादन सहयोग में सक्रिय योगदान दिया जाता है।

2. श्री घनश्याम बंसवाल, कनिष्ठ अनुभाग अधिकारी (राजभाषा), पश्चिम क्षेत्र कार्यालयः श्री बंसवाल का मुंबई 'ख' क्षेत्र में स्थित हिंदीतर भाषी कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में आई चुनौतियों के समाधान व पत्राचार के आंकड़ों को क्रमशः बढ़ाने में अहम योगदान है।

3. श्री गणेश बर्मन, अनुभाग अधिकारी (राजभाषा) उत्तरी क्षेत्र कार्यालयः सफदरगंज एयरपोर्ट उत्तरी क्षेत्र कार्यालय में पदस्थ व नागर विमानन मंत्रालय में

तैनात श्री बर्मन के द्वारा निष्पादित सक्रिय भूमिका ने नागर विमानन मत्रालय व पवन हस लिमिटेड के मध्य एक सुस्पष्ट छवि निर्मित की है। श्री बर्मन द्वारा अनुवाद कार्य के लिए सक्रिय सहयोग व समन्वय सहित संसदीय राजभाषा समिति के दौरों के दौरान रिपोर्टों को तैयार करने व विभिन्न राजभाषाई निरीक्षणों के समय अत्यावश्यक समन्वय सहयोग प्रदान किया जाता है। पवन हंस द्वारा हासिल की गई इस उल्लेखनीय उपलब्धि के सापेक्ष राजभाषा कार्मिकों के सराहनीय, समर्पित एवं उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए राजभाषा अनुभाग से संबद्ध उक्त समस्त कार्मिकों को उनका मनोबल बनाए रखने के लिए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय के हस्ताक्षर स्वरूप प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये हैं।

पवन हंस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
प्रशस्ति पत्र
सुश्री रेखा रानी, आशुलिपिक टंकक (हिंदी) – प्रधान कार्यालय
हिंदी पखवाड़ा - वर्ष 2014 के क्रम में नागर विमानन मंत्रालय द्वारा पवन हंस लिमिटेड को हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाला कार्यालय घोषित किए जाने व प्रथम पुरस्कार का शील्ड प्रदान किए जाने के उपलक्ष्य में आप द्वारा निष्पादित सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की जाती है।
पवन हंस लिमिटेड को प्राप्त प्रथम पुरस्कार में आपके द्वारा किया गया योगदान अहम है। आशा है कि राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगामी प्रगति में आप सतत प्रयत्नशील रहेंगे और पवन हंस लिमिटेड को इसी प्रकार दक्षतापूर्वक सफल सेवाएं प्रदान करती रहेंगी।
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

सुश्री रेखा रानी, आशुलिपिक टंकक (हिंदी) प्रधान कार्यालय

श्री गणेश वर्मन, अनुभाग अधिकारी उत्तरी क्षेत्र

पवन हंस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
प्रशस्ति पत्र
श्री गणेश वर्मन, अनुभाग अधिकारी (राजभाषा) – उत्तरी क्षेत्र
हिंदी पखवाड़ा - वर्ष 2014 के क्रम में नागर विमानन मंत्रालय द्वारा पवन हंस लिमिटेड को हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाला कार्यालय घोषित किए जाने व प्रथम पुरस्कार का शील्ड प्रदान किए जाने के उपलक्ष्य में आप द्वारा निष्पादित सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की जाती है।
पवन हंस लिमिटेड को प्राप्त प्रथम पुरस्कार में आपके द्वारा किया गया योगदान अहम है। आशा है कि राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगामी प्रगति में आप सतत प्रयत्नशील रहेंगे और पवन हंस लिमिटेड को इसी प्रकार दक्षतापूर्वक सफल सेवाएं प्रदान करते रहेंगे।
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

पवन हंस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
प्रशस्ति पत्र
श्री घनश्याम बसवाल, कनिष्ठ अनुभाग अधिकारी (राजभाषा) – पश्चिम क्षेत्र
हिंदी पखवाड़ा - वर्ष 2014 के क्रम में नागर विमानन मंत्रालय द्वारा पवन हंस लिमिटेड को हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाला कार्यालय घोषित किए जाने व प्रथम पुरस्कार का शील्ड प्रदान किए जाने के उपलक्ष्य में आप द्वारा निष्पादित सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की जाती है।
पवन हंस लिमिटेड को प्राप्त प्रथम पुरस्कार में आपके द्वारा किया गया योगदान अहम है। आशा है कि राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगामी प्रगति में आप सतत प्रयत्नशील रहेंगे और पवन हंस लिमिटेड को इसी प्रकार दक्षतापूर्वक सफल सेवाएं प्रदान करते रहेंगे।
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

श्री घनश्याम बसवाल, कनिष्ठ अनुभाग अधिकारी पश्चिम क्षेत्र

सोशल सर्किट

कोई-कोई

फूलों को सभी छूते हैं
कांटो को छूता है कोई-कोई।

खुशियां तो सभी चाहते हैं
गम चुनता है कोई-कोई।

गलती तो सभी निकालते हैं
सुधार करता है कोई-कोई।

ठुकरा तो सभी देते हैं
प्यार देता है कोई-कोई।

झगड़ा तो सभी करा देते हैं
फैसला करता है कोई-कोई।

दिल तो सभी तोड़ देते हैं
हौसला बढ़ाता है कोई-कोई।

दोस्त तो सभी बनाते हैं
दोस्ती निभाता है कोई-कोई।

बोये जाते हैं बेटे

बोये जाते हैं बेटे
पर उग जाती हैं बेटियां
खाद पानी बेटों को
पर लहराती हैं बेटियां
स्कूल जाते हैं बेटे
पर पढ़ जाती हैं बेटियां
मेहनत करते हैं बेटे
पर अव्वल आती हैं बेटियां
रुलाते हैं जब खूब बेटे
तब हंसाती है बेटियां
नाम करें न करें बेटे
पर नाम कमाती हैं बेटियां
छोड़ जाते हैं जब बेटे
तो काम आती हैं बेटियां
कुछ क्षण की मेहमान फिर भी
मारी जाती हैं बेटियां

कर्म किये जा

कर्मों पे अधिकार तेरा
मत चिंता कर क्या फल मिलना है
फल जैसा भी हो तुझको
तो कर्म निरंतर ही करना है
अनचाहा या मनचाहा
जैसा भी हो परिणाम
अनासक्त समबुद्धियुक्त तू
नित्य किये जा कर्म
फल पाने की इच्छा से
जो किया कर्म तो वह खोटा है
कर्मयोग का शरणागत हो
फल का इच्छुक तो रोता है
समबुध्दियुक्त किया जो कर्म
पर नहीं फलों की अभिलाषा है
पूर्ण कुशलता से करना हर कर्म
योग की परिभाषा है

श्रीमती अफरोज अदलवी
कनि.सचिव अधिकारी.
वित्त एवं लेखा विभाग

क्या खूब कहा

गरीब मीलों चलता है, भोजन पाने के लिए,
अमीर मीलों चलता है, उसे पचाने के लिए।
किसी के पास खाने के लिए एक वक्त की रोटी नहीं,
किसी के पास एक रोटी खाने के लिए वक्त नहीं।
कोई अपनों के लिए, अपनी रोटी छोड़ देता है,
कोई रोटी के लिए, अपनों को छोड़ देता है।
इंसान भी क्या चीज है।
दौलत बचाने के लिए सेहत खो देता है और
सेहत को वापस पाने के लिए, दौलत खो देता है।
जीता ऐसे है जैसे कभी मरेगा ही नहीं,
और मर ऐसे जाता है जैसे कभी जिया ही नहीं।
एक मिनट में जिंदगी नहीं बदलती
पर एक मिनट में लिया गया फैसला,
जिंदगी बदल देता है।

रविना एच चेलानी कनिष्ठ
सचिवीय अधिकारी
सामग्री विभाग, पक्षे

पवन हंस लिमिटेड की फेसबुक पर उपस्थिति

प्रगति की रफ्तार में पवन हंस की सेवाओं की अहम भूमिका रही है। हम बदलते समय के साथ सकारात्मक परिवर्तनों को अपनाते हुए आगे बढ़ रहे हैं। नई पहल के लिए तत्परता से कदम उठाना और बाजार के जोखिमों के लिए स्वयं को सबल बनाना साथ ही समय के साथ भावी परियोजनाओं और आम देशवासी के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए हमें उत्प्रेरक का कार्य भी करना है। हाल ही में हमने बाजार-कारोबार और आम जनता की जन संचार से जुड़ी जरूरतों को अपने पवन हंस में लागू किया है। सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से वैश्विक समाज से जुड़ने के लिए पवन हंस की फेसबुक आईडी बनाई गई है और हम सभी पवन हंस कर्मियों सहित इंटरनेट परिवार के सदस्यों द्वारा इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। विश्व का कोई भी नेटीजन पवन हंस परिवार का मित्र बन सकता है और हमारी योजनाओं परिचालनों और कारोबारी विस्तार का भागीदार बन सकता है। हमें इस बात पर भी गर्व है कि पवन हंस को सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से 1000 लोगों द्वारा पसंद किया जा चुका है।

दिनांक 31.12.2014

पवन हंस अगम्य ऊंचाई पर

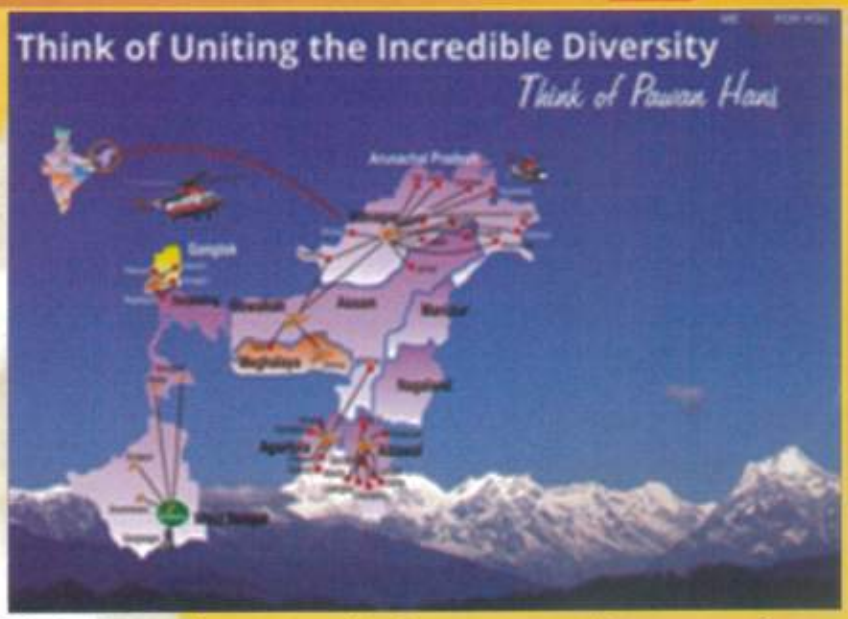

वर्ष 2013-14 के ऑडिट आंकड़े दिखाते हैं कि वित्त वर्ष 2013-14 के दौरान पवन हंस ने ₹ 530 करोड़ का उच्चतम टर्नऑवर लगभग प्राप्त किया है। यह वृद्धि पिछले वर्ष के ₹ 465 करोड़ के आकड़े से लगभग 15 प्रतिशत अधिक है। परिचालन से लाभ में 2012-13 में ₹ 39 करोड़ से ₹ 73 करोड़ की वृद्धि हुई जो कि 87 प्रतिशत है तथा कर मूल्य ह्रास का कुल लाभ और अन्य सभी देनदारी भी वर्ष 2012-13 में ₹ 11.70 करोड़ से वर्ष 2013-14 में ₹ 38.57 करोड़ रही जो लगभग दो गुना है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि वित्त वर्ष 2011-12 के दौरान कंपनी ने ₹ 10.35 करोड़ की हानि उठायी थी। वर्ष 2013-14 के समुन्नत वित्त परिणामों की घोषणा के साथ ही, वित्त पवन हंस ने चार वर्ष के अंतराल के पश्चात् लाभांश देना प्रारंभ कर दिया जो कि ₹ 7.71 करोड़ है।

घटना मुक्त उड़ान वर्ष के कारण, बीमा प्रीमियम दो वर्ष की तुलना में आधे से भी कम, नीचे आ गया है, जो कि ₹ 12 करोड़ की बचत तक पहुंचा है। प्रति कर्मचारी उत्पादकता भी 2011-12 के मुकाबले में ₹ 44.33 लाख से वर्ष 2013-14 में ₹ 58.91 बढ़ी है। कंपनी की नई भर्ती योजना के तहत 10 नये पायलटो की नियुक्ति की गई जिससे कॉकपिट लागत नीचे की ओर गिरी है। यह उम्मीद की जाती है कि इससे यह कंपनी के लिए ₹ 7.30 करोड़ की बचत हुई है। पवन हंस के अप्रनि के अनुसार इस टर्नऑवर को प्राप्त करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए ताकि विमानन कंपनी को कार्यकुशल बनाया जाए और अतिरिक्त खर्चो को कम किया जाए। इसके साथ-साथ सुरक्षा पहलुओं पर किसी भी प्रकार से समझौता नहीं किया जाए एवं पिछले तीन वर्ष पवनहंस के लिए बिना किसी अप्रिय घटना (दुर्घटना) के गुजरे। 53 हेलीकॉप्टर के बेड़े की बेड़ा अनुप्रयोज्यता भी 83 प्रतिशत के आसपास अपने उच्च स्तर पर है। वर्ष 2013-14 में पवन हंस की क्रेडिट रेटिंग भी ए के साथ ए+हुई है। उत्तरी-पूर्व में 11 हेलिकॉप्टरों की तैनाती को पवन हंस ने पूर्वोत्तर राज्यों की मांग को पूरा करने के लिए नए क्षेत्रीय कार्यालय जिसका मुख्यालय गुवाहटी है की निर्माण कार्यो की स्थापना की है। समग्र प्रदर्शन और टर्न ओवर भी बाहरी एजेंसियों द्वारा स्वीकार किया गया तथा व्यापार में स्थिरता के लिए पिछले एक वर्ष के अंदर कंपनी को पांच महत्वपूर्ण अवार्ड प्रदान किये गये, जिसमें लंदन में मान्यता प्राप्त प्रतिष्ठित "गोल्डन पीकॉक" अवार्ड भी शामिल है। यह भी उल्लेखनीय है कि पवन हंस को अपने कारोबार के लिए सरकार की ओर से कोई सहायता नहीं मिली, पर नए अनुबंध प्रतिस्पर्द्धी नीलामी से प्राप्त होते है। अच्छे परिणामों के साथ पवन हंस के लिए यह आसान हो गया है कि वह अपनी इक्विटी का हिस्सा बाजार में लगाए और यह उम्मीद की जाती है कि अपनी पुस्तक का मूल्यांकन पब्लिक प्रस्ताव की सफलता की ओर ले जाएगा।

हिंदी दिवस/पखवाड़ा प्रतियोगिता

14 सितम्बर 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। इस निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने के लिए प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस व 14-28 सितंबर के दौरान हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जाता है। हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर पवन हंस के प्रधान कार्यालय व क्षेत्रीय कार्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी हिंदी की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और कर्मचारियों ने प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

दिनांक 15.09.2014 को हिंदी यूनिकोड टंकण प्रतियोगिता, 2014

प्रधान कार्यालयः- श्री अजय कमल, क. सचि. अधि.-I (कार्मिक) प्र. का. (प्रथम), सुश्री रेखा रानी, आशुलिपिक टंकण, प्रशासन (द्वितीय), सुश्री प्रीति सिंह, कनि. सचि. अधि. (प्रशासन)(तृतीय), संजीव कुमार, क. अधि.-I, (विपणन) (सांत्वना), श्रीमती रीमा ममतानी, सचिवीय अधि. (अभि.) (सांत्वना), श्री एन के अरोड़ा, अनुभाग अधिकारी (कार्मिक) (सांत्वना)।

उत्तरी क्षेत्र कार्यालयः- श्री मनोज कुमार वर्मा, सचि. अधि., का. एवं प्रशा (प्रथम), सुश्री मीना छाबड़ा, कनि. सचि. अधि. (म.प्र) उक्षे (द्वितीय)।

पश्चिम क्षेत्र कार्यालयः- श्री असित मिंज, उप प्रबंधक (कार्मिक) (प्रथम), सुश्री शीतल रविंद्र बनकर (द्वितीय), सुश्री रविना एच चेलानी, कनि. सचि. अधि. सामग्री (तृतीय), श्री विनया ह. बामने (सांत्वना), श्रीमती खुशबू गुप्ता, कनि. तकनीशियन, अभि (सांत्वना), सुश्री नीता एच निकाले (सांत्वना)।

दिनांक 18.09.2014 को हिंदी सुलेख प्रतियोगिता

प्रधान कार्यालयः- श्री देवेन्द्र पाल आर्या, इंफोकॉम सहायक, आईटी (प्रथम), श्री अजय कमल, क. सचि. अधि.-I (कार्मिक) प्र.का. व लोहित वैश्य (द्वितीय), सुश्री अलका ग्रोवर, कनि. सचि. अधि. (कार्मिक) व अविनाश कुमार (तृतीय), सुश्री रीमा ममतानी, सचिवीय अधि. (अभि.) (सांत्वना), श्री एन के अरोड़ा, अनुभाग अधिकारी (कार्मिक) (सांत्वना), श्री दीपक कुमार, अधिकारी (प्रशासन) (सांत्वना)।

उत्तरी क्षेत्र कार्यालयः- श्री धीरज सिंह, सहायक सामग्री (प्रथम), श्री मनोज कुमार वर्मा, अनुभाग अधि. (का. एवं प्रशा) (द्वितीय), श्री शिव कुमार पण्डित, कनि. तकनीशियन, अभि. (तृतीय), सुश्री मोनिका मौर्य, तकनीशियन, अभि (सांत्वना), सुश्री रीचा कुमारी, कनि. तकनीशियन, अभि (सांत्वना), श्री भंवर सिंह, कनिष्ठ सहायक, का. एवं प्रशा (सांत्वना)।

दिनांक 18.09.2014 को हिंदी सुलेख प्रतियोगिता

पश्चिम क्षेत्र कार्यालयः- मंगला नितिन निकम व शीतल यशवंत सालुखे कनि. सहायक (विले) (प्रथम), अफरोज अ दलवी, कनि. सचि. अधि., विले व श्री पांण्डुरंग घोराडकर, कनि. अनु. अधि. (द्वितीय), श्री राहुल तिवारी, कनि. तकनीशियन, अभि. व श्री एस. एलोंगोविन. कनि. अनु अभियंता. अभि (तृतीय), सुश्री रेजिना एम., कनिष्ठ अनुभाग अधि.।, सामग्री (सांत्वना), श्री अनिक चंद्र मिश्रा, कनि. अभियंता. अभियंता (सांत्वना), श्री उज्जवल चक्रवर्ती, कनि. अनु अभियंता (सांत्वना)।

दिनांक 23.09.2010 को (हिंदी मेरी पहचान) आलेख प्रतियोगिता

प्रधान कार्यालयः- श्री रामाश्रय सिंह, कनिष्ठ अनुभाग अधिकारी (वित्त एवं लेखा) व श्री जंगवीर सिंह, अनुभाग अधिकारी, प्रशासन (प्रथम), श्री संजीव कुमार, क. सचि. अधि.-। (विपणन) (द्वितीय), श्री अजय कमल, क. सचि. अधि.-। (कार्मिक) प्र.का. (तृतीय), श्री देवेन्द्र पाल आर्या, इंफोकॉम सहायक, आईटी (सांत्वना), सुश्री रेखा रानी, आशुलिपिक टंकक (प्रशा) (सांत्वना), श्री उपेन्द्र नाथ पाण्डे (वित्त एवं लेखा) (सांत्वना)।

उत्तरी क्षेत्र कार्यालयः- श्री मनोज कुमार वर्मा, सचि. अधि., का. एवं प्रशा (प्रथम), श्री भंवर सिंह, कनिष्ठ सहायक, का. एवं प्रशा (द्वितीय), श्री धीरज सिंह, सहायक सामग्री (तृतीय), श्री शिव कुमार पण्डित, कनि. तकनीशियन, अभि. (सांत्वना), श्री सुरेश शाह, कार्यालय परिचर, सामग्री (सांत्वना)।

पश्चिम क्षेत्रः- श्री राहुल तिवारी, कनिष्ठ अनुदेशक, पीएचटीआई (प्रथम), श्री शशिकांत प्रजापति, कनि. इन्स्ट्रक्टर, पीएचटीआई (द्वितीय), श्री मनीषा तिवारी कनि. तकनीशियन, अभि (तृतीय), सुश्री शीतल यशवंत सालुखे कनि. सहायक (विले) (सांत्वना), श्रीमती खुशबू गुप्ता, कनि. तकनीशियन, अभि (सांत्वना), अफरोज अ दलवी, कनि. सचि. अधि., विले (सांत्वना)।

दिनांक 25.09.2014 को हिंदी फिल्म की समीक्षा प्रतियोगिता

प्रधान कार्यालयः- श्री संजीव कुमार, क. सचि. अधि.-। (विपणन) (प्रथम), श्री राहुल श्रीवास्तव, अधिकारी (विपणन) (द्वितीय), श्री एनके अरोड़ा, अनुभाग अधिकारी (कार्मिक) (तृतीय), श्री जंगवीर सिंह, अनुभाग अधिकारी (प्रशासन) (सांत्वना), श्री रामाश्रय सिंह, कनिष्ठ अनुभाग अधिकारी (वित्त एवं लेखा) व सुश्री रीमा ममतानी, सचिवीय अधि. (अभि.) (सांत्वना), श्री उमेश्वरी बिष्ट, कनिष्ठ अनुभाग अधिकारी (वित्त एवं लेखा) (सांत्वना)।

दिनांक 25.09.2014 को हिंदी फिल्म की समीक्षा प्रतियोगिता

उत्तरी क्षेत्र कार्यालयः- श्री भंवर सिंह, कनिष्ठ सहायक, का. एवं प्रशा (प्रथम), श्री मनोज कुमार वर्मा, सचि. अधि (कार्मिक) (द्वितीय), श्री धीरज सिंह, सहायक, सामग्री (तृतीय), श्री दिलबाग सिंह, परिचर, का. एवं प्रशा (सांत्वना), श्री सुरेश शाह, कार्यालय परिचर, सामग्री (सांत्वना)।

पश्चिम क्षेत्र कार्यालयः- सुश्री मनीषा तिवारी कनि. तकनीशियन, अभि (प्रथम), सुश्री मंगला नितिन निकम, लाइब्रेरियन (द्वितीय), सुश्री रविना एच चेलानी व सुनील कुमार सक्सेना (तृतीय), सुश्री प्रतिभा प्रमोद भिंगार्डे, कनि. अनु. अधि. विले (सांत्वना), श्री सिद्धार्थ प्र इंगोले, कनि. सहायक. आईटी (सांत्वना), श्री नरेश आर बुरडे, कनि. अनु. अधि. कार्मिक (सांत्वना)।

दिनांक 15.09.2014 को हिंदी यूनीकोड टंकण प्रतियोगिता

अन्य प्रतिभागियों के नाम

प्रधान कार्यालयः- सुनीता महाजन, संजय कुमार, रोहित कुमार शर्मा, किरन तनेजा, उमेश्वरी बिष्ट, रामाश्रय सिंह, भूपिंदर कौर, प्रदीप कुमार, देवेन्द्र पाल आर्या, राणा सूर्य प्रताप।

उत्तरी क्षेत्रः- मनोज कुमार वर्मा, मीना छाबड़ा, प्रीति वर्मा, ताजुद्दीन फख, विक्रम पाटिल, संतोष डी, सिद्धार्थ इंगोले, वासुदेव खापेकर, समीर कुमार कपूर, ललिता सुदीप दास, जंगवीर सिंह, करूणा महेश पाटी, अंजली, श्रद्धा वास्ते, शीतल यशवंत सालुखे, बी टी शिखंडे।

पश्चिम क्षेत्रः- मंगला नितिन निकम, नरेश आर बुरडे।

दिनांक 23.09.2010 को (हिंदी मेरी पहचान) आलेख प्रतियोगिता

अन्य प्रतिभागियों के नाम

पश्चिम क्षेत्रः- सिद्धार्थ प्र इंगोले., त्यागराजन एम एम, विनया ह. बामने, प्रतिभा प्रमोद भिगार्डे, पाटील अशोक रघुनाथ, सुजाता सी. नारिग्रेकर, मंगला नितिन निकम, नरेश आर बुरडे, शीतल र बनकर।

दिनांक 25.09.2010 को (हिन्दी फिल्म की समीक्षा) प्रतियोगिता

प्रधान कार्यालयः- उमेश्वरी बिष्ट, उपेन्द्र नाथ पांडे, देवेन्द्र पाल आर्या, रेखा रानी।

अन्य प्रतिभागियों के नाम

दिनांक 18.09.2014 को सुलेख प्रतियोगिता

प्रधान कार्यालयः- रेखा रानी, जंगवीर सिंह, भूपेन्द्र कौर, प्रीति सिंह, संतोष टुटेजा, राना सूर्य प्रताप सिंह, रामाश्रम सिंह, सुनीता महाजन, संजीव कुमार, यू एन पांडे, रिकु प्रसाद वर्मा, रोहित कुमार शर्मा, ऋषिपाल, प्रवीण कुमार सिंह, सुषमा रघुवंशी, प्रदीप कुमार, सचिन कुमार, मधुबाला, किरन तनेजा, अजय परसोला, अंजली बक्शी, नरेश।

उत्तरी क्षेत्रः- सतीश कुमार, कामेश्वर प्रताप सिंह, दिलबाग सिंह, सुरेश साह

पश्चिम क्षेत्रः- ललिता सुदीप दास, अरविंद पोब, भरत, यदुवंशी राम, जगदीश रघुनाथ तरे, पीड अदक, प्रवीण मधुकर गुप्ते, करुणा महेश पाटिल, प्रतिभा प्रमोद भिगार्डे, के. विनोद कुमार, समीर कुमार कपूर, दीपिका हसंदा, राजेन्द्र कुमार सु. सालपुते, विनिपा ह. बामने, पाटली अशोक रघुनाथ, खुशबू गुप्ता, के. परण ज्योति, डब्यू राल दीपा, दीपिका शर्मा, हरिश बी शिंदे, शशिकांत प्रजापति, राजेश कुमार टी, ताज्जुदीन फख, सुनील कुमार सक्सेना, बी.एन.राव, राजकुमार अ. मिस्त्री, जरारतन लक्ष्मण शिंदे, सुनील बा. सातार्डेकर, दिवाराज कुमार महान्त, हिमांशु श्रीवास्तव, संतोष तुकाराम डोंगरे, बीना राय, शर्वरी कुणाल कोरगावकंर, त्रिलोचन सिंह डब्बी, सोनल ह. भगत, कुलदीप बालासाहेब इथापे, प्रीति वर्मा, सुनील कुमार महान्ती, दीपा, विक्रम मोरे पाटील, निशा पंडित, अमर नाथ, दीपाली दिलीप लाड, सोमदत्त शर्मा, आर पीटर प्रकाश, झरीफ रघतीप, सुभाष महन, एलविडो फ्रोइस, नरेश आर बुरडे, अभिजीत कुमार राय, अनिल चौहान, गौरव प्रकाश देवकुले, गोपाल मल्लिक, संतोष शेट्टी, उपेन्द्र नारायण राय, हसनैन आजिम, सुमन कर्मकार, रामकुमार, मदार गजानन डाखव, के यत के रेडडी, सेल्विन डिसोजा, जिनेंद्र रमेश म्हागे, आशुतोष कुमार भारद्वाज, महेश्वर प्रधान, सर्बजीत सिंह, राजीव पी., प्रजाक्ती पवार, सूर्यकांत जाधव, मनीषा तिवारी, सुरेश कुमार अ., रामनाथ द्विवेदी, सिद्धार्थ प्रकाश राव, सूर्यवंशी अंकुश ना., विजय द. राऊन, रमन राजेन्द्र।

पूर्वी क्षेत्रः- हीरामणी हजारिका, धनेश्वर महान्ता, पी जे मजूमदार, अशोक कुमार, प्रवीण केरकता, विचित्र मजूमदार, गोपी राम दास, सुभाष वैश्य, घनश्याम के बसफोरे, सीडी दास, चन्दा देवी, पीके पांडे, डी गणेश, एस एम रहमान, टीसी रमेश।

कहानी

प्रफुल्लता

श्री जगवीर सिंह
अनु. अधि (प्रशा.)

आधुनिक सभ्यता ने हमारी जो सबसे कीमती चीज छीनी है, वह है हमारी हंसी। हमारी मान्यता भी यह रही है कि हंसते हुए लोग छोटे और बोझिल मालूम पड़ते हैं और उदास लोग ऊंचे और महान मालूम पड़ते हैं।

सहारनपुर में आबादी से दूर प्रकृति की गोद में एक ऐसा मन्दिर है, 'मोक्षायतन' शरीर शिल्प एवं योग साधना शोध केन्द्र, जो ऐसे नागरिकों का निर्माण करता है जो स्वस्थ हों, सुसंस्कृत हों, उदबुद्ध हो, जीवन सिद्ध हों और अपनी संचित शक्ति को राष्ट्र हित में प्रयोग करते हों। मोक्षायतन योगाश्रम, मुस्कुराहटों का, प्रफुल्लता का, प्रमुदित होने का संदेश इस रुग्ण समाज को देता है। शारीरिक व्यायाम के बाद एक साधक हंसता है फिर दूसरा, फिर तीसरा और उनकी हंसी एक दूसरे की हंसी में बढ़ती चली जाती है। आस-पास के इलाके में हंसी की लहरें गूंज जाती हैं और इस हंसी से एक संदेश निकलता है कि तुम जियो इस भांति कि तुम हंस सको। इस भांति जियों कि तुम्हारा पूरा जीवन ही हंसी का फव्वारा हो जाये।

हंसते हुए आदमी ने कभी पाप किया? बहुत मुश्किल है हंसते हुए आदमी ने किसी की हत्या की हो, कोई अनाचार, व्यभिचार किया हो। सारे पाप के पीछे उदासी, दुख, अंधेरा, बोझ, भारीपन, क्रोध, घृणा-वह सब चाहिए। अगर एक बार हंसती हुई मनुष्यता हम पैदा कर सके तो दुनिया से 90 प्रतिशत पाप तत्क्षण गिर जायेंगे। जिन लोगों ने पृथ्वी को उदास किया है, उन लोगों ने इस पृथ्वी को पापों से भर दिया है।

चीन में तीन फकीर हुए। उन्हें लोग लाफिंग सेन्ट्स कहते थे। सबको हंसाना और हंसना यही उनका जीवन था। कुछ समय पश्चात एक फकीर की मृत्यु हो गयी। लोग देखने को आये कि शायद इस बार सन्त रोते होंगे लेकिन उन्हें बड़ी हैरानी हुई उन्हें हंसता देखकर। उन्होंने बताया कि मौत ने तो जिन्दगी को एक हंसी बना दिया, जस्ट ए जोक। हम समझते थे जियेंगे सदा, आज पता चला कि गड़बड़ है। तो जो सोचते हैं कि जीना है सदा वे ही गम्भीर हो सकते हैं। गंभीर रहने का कोई कारण न रहा और फिर उसकी लाश चढ़ाई गई चिता पर, थोड़ी देर में भीड़ में हंसी छूटने लगी, क्योंकि वह आदमी जो मर गया था वह अपने कपड़ों में पटाखे, फुलझड़ी छिपाकर मर गया था। वह जिंदगी भर हंसता रहा आज मर गया है। वह अब है भी नहीं, फिर भी इन्तजाम कर गया है कि तुम अंतिम क्षण में भी हंसना।

कैसी हमारी आदत हो गई है। क्या कभी सुबह उठकर धन्यवाद दिया ईश्वर को जीवन का एक दिन और देने के लिए। अगर दुर्घटना में टांग टूट गयी तो ईश्वर को दोष देंगे किन्तु जब तक दोनों टांगे हैं कोई कृतज्ञता नहीं। जो हमें मिला है उसकी कोई खुशी नहीं है, जो नहीं मिला उसकी पीड़ा है। यह ढंग उदासी में ले जाने वाला है।

एक मुसलमान बादशाह था, उसका एक बूढ़ा नौकर था। दोनों साथ-साथ रहते खाते, सोते व यात्रा करते थे। एक दिन शिकार पर गये। वहां एक पेड़ पर तीन सुंदर फल देखकर बादशाह ने तोड़े और एक बूढ़े नौकर को खाने को दिया। नौकर ने बहुत तारीफ की, बादशाह ने दूसरा भी दे दिया। फिर तीसरा भी मांगने लगा। बादशाह ने कहा जब इतना स्वादिष्ट है तो क्या मुझे चखने नहीं देगा। उसने कहा नहीं और बादशाह के हाथ से फल छीनने लगा तो बादशाह को क्रोध आ गया। सम्राट ने वह फल जबरदस्ती मुंह में रख लिया। परन्तु वह तो कड़वा जहर था? उसने कहा पागल यह तो कड़वा है तू इसे क्यों खा गया? उस बूढ़े ने कहा, जिन हाथों से बहुत मीठे फल खाने को मिले थे उनसे इस कड़वे फल की शिकायत करूं? फिर आपके हाथ के फल को जीभ ने कहा कड़वा, आत्मा ने कहा नहीं? नहीं-नहीं इतना अकृतज्ञ मैं नहीं हूं, वह बूढ़ा बोला।

लेकिन हम सब इतने ही अकृतज्ञ हैं। जीवन के अनन्त-अनन्त आनन्द की वर्षा में हमें उसका कोई बोध नहीं होता, लेकिन जरा सी गड़बड़ और हम बोध से भर जाते हैं। इस अनन्त-अनन्त आनन्द की राशि के लिए, अनुग्रह (ग्रेटीट्यूड) हो तो हम प्रमुदित हो सकते हैं। आनन्दित हो सकते हैं।

रोम में एक सम्राट ने अपने बड़े वजीर को फांसी की सजा दे दी। उस दिन उसका जन्मदिन था। नर्तक थे, नर्तकियां थीं। भोज का आयोजन था। सारे मित्र एवं रिश्तेदार एकत्र थे। शाम को छह बजे फांसी की आज्ञा थी। सारे घर में उदासी छा गयी, किन्तु वजीर ने कहा कि वाद्य नृत्य शुरू करो और मैं केवल देखूंगा ही नहीं बल्कि स्वयं भी नाचूंगा, क्योंकि यह मेरा आखिरी दिन है। उसकी पत्नी बोली मौत सामने खड़ी है हम खुशी कैसे मनायें? उस वजीर ने कहा जो मौत को उसके सामने खड़े देखकर खुशी मना सकता है, उसके लिए मौत समाप्त हो जाती है। मौत उससे हार जाती है। सम्राट देखने आया और हैरान हो गया। वजीर ने कहा सम्राट आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपकी बड़ी कृपा कि आपने आज के दिन यह खबर भेजी। आज सब मित्र मेरे पास हैं, जिन्हें मैं प्रेम करता हूं और जो मुझे प्रेम करते हैं। इतने निकट प्रेमियों के बीच मर जाने से बड़ा सौभाग्य और शुभ अवसर कोई नहीं हो सकता था। मौत की चुनौती ने मेरे आनन्द को एकदम गहरा कर दिया है। आज मैं पूरी खुशी से भर गया हूं, कैसे धन्यवाद करूं।

सम्राट अवाक् हो गया। उसने कहा मैंने सोचा तुम्हें दुखी कर सकूंगा। तुम दुखी नहीं हो सके, तुम्हें मौत दुखी नहीं कर सकती तो तुम्हें फांसी पर ले जाना व्यर्थ है। तुम्हें जीने की कला मालूम है। जिन्हें जीने की कला मालूम है वे ही जीते हैं। जिसे जीने की कला मालूम नहीं वह केवल भ्रम में होता है कि जी रहा हूं, वह मुर्दा है।

जीवन चाहिए प्रफुल्लता से भरपूर। सुबह से शाम तक दिन व रात में, सपने में भी, जीवन एक नृत्य बन जाये, एक खुशी का आंदोलन, तो हम स्वस्थ सभ्यता का निर्माण कर सकते हैं। सिर्फ हंसते हुए लोग ही प्रभु के निकट पहुंचते हैं।

"सदैव प्रसन्न रहना ही ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।"

जंगल का रोमांच

1 फरवरी सन 1977 ईसवी को दुधवा के जंगलों को राष्ट्रीय उद्यान बनाया गया। सन 1987-88 ईसवी में किशनपुर वन्य जीव विहार को दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में शामिल कर लिया गया तथा इसे बाघ संरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया गया। बाद में 66 वर्ग किमी का बफर जोन सन् 1997 ईसवी में सम्मिलत कर लिया गया, अब इस संरक्षित क्षेत्र का क्षेत्रफल 884 वर्ग किमी हो गया है। दुधवा राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना के समय यहां बाघ, तेंदुए, गेण्डा, हाथी, बारहसिंगा, चीतल, पाढ़ा, कांकड़, कृष्ण मृग, चौसिंगा, सांभर, नीलगाय, वाइल्ड डाग, भेड़िया, लकड़बग्घा, सियार, लोमड़ी, हिस्पिड हेयर, रैटेल, ब्लैक नेक्ड स्टार्क, खुली नेक्ड स्टार्क, ओपेन बिल्ड स्टार्क, पैन्टेड स्टार्क, बेन्गाल फ्लोरिकन, पार्कुपाइन, फ्लाइंग स्क्वैरल के अतिरिक्त पक्षियों, सरीसृपों, उभयचर, मछलियों व अर्थोपोड्स की लाखों प्रजातियां निवास करती थी। कभी जंगली भैसें भी यहां रहते थे जो कि मानव आबादी के दखल से धीरे-धीरे विलुप्त हो गये। इन भैसों की कभी मौजूदगी थी, इसका प्रमाण वन क्षेत्र में रहने वाले ग्रामीणों पालतू मवेशियों के सींघ व माथा देखकर लगा सकते है कि इनमें अपने पूर्वजों का डीएनए वहीं लक्षण प्रदर्शित कर रहा है। मगरमच्छ व घड़ियाल भी सुहेली व शारदा और घाघरा जैसी विशाल नदियों में दिखाई दे जाते हैं। दुधवा उद्यान जैव विविधता के मामले में काफी समृद्ध माना जाता है। पर्यावरणीय दृष्टि से इस जैव विविधता को भारतीय संपदा और अमूल्य पारिस्थितिकी धरोहर के तौर पर माना जाता है। इसके जंगलों में मुख्यतः साल और शाखू के वृक्ष बहुतायत से मिलते हैं। चीतल, साभर, काकड़, बारहसिंहा, बाघ, तेन्दुआ, भालू, स्याही, फ्लाइंग स्क्वैरल, हिस्पिड हेयर, बंगाल फ्लोरिकन, हाथी, गैन्गेटिक डाल्फिन, मगरमच्छ, लगभग 400 पक्षी प्रजातियां एंव रेप्टाइल्स (सरीसृप), एम्फीबियन, तितिलियों के अतिरिक्त दुधवा के जंगल तमाम अज्ञात व अनदेखी प्रजातियों का घर है।

साल, असना, बहेड़ा, जामुन, खैर के अतिरिक्त कई प्रकार के वृक्ष इस वन में मौजूद हैं। विभिन्न प्रकार की झाड़ियां, घासें, लतिकायें, औषधीय वनस्पतियां व सुन्दर पुष्पों वाली वनस्पतियां बहुतायत में पाई जाती हैं। वन्य जीव संरक्षण हेतु दुधवा उद्यान में विभिन्न परियोजनाएं भी चलाई गई हैं। इन परियोजनाओं में बाघ और गेंडा जैसे जीवों को बचाने के लिए पहल की गई है। दुधवा नेशनल पार्क एवं किशनपुर पशु विहार को 1987-88 में भारत सरकार के प्रोजेक्ट टाइगर परियोजना में शामिल करने से इसका महत्व और भी बढ़ गया है। 24 अप्रैल 2010 को राज्य सरकार ने बाघों के संरक्षण के लिए बाघ संरक्षण बल गठित करने का निर्णय लिया है, जिसका मुख्यालय दुधवा राष्ट्रीय उद्यान को बनाया गया है।

दुधवा उद्यान स्थापना के समय से ही पर्यटकों, पर्यावरणविदों और वन्य-जीव प्रेमियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। थारू हट और सफारी की सुविधाएं पर्यटकों के आकर्षण और कौतूहल के प्रमुख केंद्र हैं। पर्यटकों के रुकने के लिए दुधवा में आधुनिक शैली में थारू हट उपलब्ध हैं।

रेस्ट हाउस

प्राचीन इण्डो-ब्रिटिश शैली की इमारते पर्यटकों को इस घने जंगल में आवास प्रदान करती है, जहाँ प्रकृति दर्शन का रोमांच दोगुना हो जाता हैं। दुधवा के वनों में ब्रिटिश राज से लेकर आजाद भारत में बनवाये गये लकड़ी के मचान कौतूहल व रोमांच उत्पन्न करते हैं।

थारू संस्कृति

कभी राजस्थान से पलायन कर दुधवा के जंगलों में रहा यह समुदाय राजस्थानी संस्कृति की झलक प्रस्तुत करता है, इनके आभूषण, नृत्य, त्योहार व पारंपरिक ज्ञान अदभुत हैं, राणा प्रताप के वंशज बताने वाले इस समुदाय का इण्डो-नेपाल बार्डर पर बसने के कारण इनके संबध नेपाली समुदायों से हुए, नतीजतन अब इनमें भारत-नेपाल की मिली-जुली संस्कृति, भाषा व शारीरिक सरंचना हैं।

दुधवा नेशनल पार्क उत्तर प्रदेश के खीरी जिले में पलिया तहसील में पड़ता है। सबसे निकट का हवाई अड्डा लखनऊ में है। लखनऊ से सड़क के रास्ते लखीमपुर, मैलानी व पलिया होते हुए दुधवा की दूरी लगभग 220 किलोमीटर है। लखनऊ से इसी रास्ते दुधवा तक छोटी लाइन की ट्रेन भी चलती है। इस रेल लाइन का काफी रास्ता टाइगर रिजर्व के बीच में से होकर निकलता है। वैसे दुधवा के सबसे निकट का बड़ा रेलवे स्टेशन दिल्ली-लखनऊ रेल मार्ग पर शाहजहांपुर है। वहां से मैलानी होते हुए दुधवा महज 107 किलोमीटर है। कर्तनिया घाट के लिए एक रास्ता दुधवा के बीच से भी होकर निकलता है। मुख्य रास्ता दुधवा से वापस पलिया होकर है। सीधे कर्तनिया जाना हो तो बहराइच से वह 86 किलोमीटर दूर है।

दुधवा वन विश्राम भवन का आरक्षण मुख्य वन संरक्षक-वन्य-जीव-लखनऊ से होता है। थारूहट दुधवा, वन विश्राम भवन बनकट, किशनपुर, सोनारीपुर, बेलरायां, सलूकापुर का आरक्षण स्थानीय मुख्यालय से होगा। सठियाना वन विश्राम भवन से आरक्षण फील्ड डायरेक्टर लखीमपुर कार्यालय से कराया जा सकता है। दुधवा टाइगर रिजर्व के उपनिदेशक ने पर्यटकों के लिए लगभग छह साल पूर्व दुधवा के जंगल में यह ट्री हाउस का निर्माण कराया था। यह ट्री हाउस विशालकाय साखू पेड़ो के सहारे लगभग पचास फुट ऊपर बनाया गया है। डबल बेडरूम वाले इस ट्री हाउस को सभी आवश्यक सुविधाओं से सुसज्जित किया गया है। लगभग चार लाख रुपए की लागत से बना हुआ शानदार ट्री हाउस पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बिंदु बना हुआ है। जानकारी होने पर पर्यटक इसे देखे बिना चैन नहीं पाते।

खरी कसौटी फीचर डेस्क

रोहिणी रिपोर्ट...

विजय कुमार

वर्ष 2013 का एक आम सा शनिवार-रविवार। मैं अभी देर से सो कर उठा ही था कि किसी लैंड लाइन नंबर से फोन आया। एक आम सोच कि शायद किसी मार्केटिंग कंपनी से फोन होगा, अनमने ढंग से फोन उठाया, दूसरी तरफ की आवाज कुछ कम थी और उसी कम आवाज़ में सवाल 'इज दैट मिस्टर विजय कुमार ?' मैंने भी कहा, 'हाँ जी बोल रहा हू। 'दूसरी तरफ से तो शायद पूरी आवाज आई परन्तु सोकर जगा होने के कारण या कि तेजी से कहे होने के कारण मेरे पल्ले सिर्फ यह पड़ा कि "...से बोल रहा हूँ"। मैंने पूछा "कौन सी कंपनी से बोल रहे हैं ?" फिर जवाब आया "आई एम कलिंग फ्रॉम एस पी जी"। मैंने फिर पूछा, "कौन से जी ?" फिर जवाब आया "सर की मैं एसपीजी सेल से बोल रहा हूं, क्या मेरी बात मिस्टर विजय कुमार जी से हो रही है ?" अब तक मेरी नींद पूरी तरह से टूट चुकी थी। मामला था भावी नरेन्द्र मोदी जी की किसी जनसभा हेतु रोहिणी हेलीपोर्ट पर आवश्यक व्यवस्था दुरुस्त करने का।

तब नरेन्द्र मोदी जी भारत के प्रधानमंत्री न होकर गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में देश भर में चुनाव अभियान पर थे और दिल्ली की चुनावी जनसभा हेतु हेलीकाप्टर सेवाओं के प्रयोग हेतु रोहिणी हेलीपोर्ट की आवश्यकता आन पड़ी थी।

तात्कालिक आवश्यकता के आधार पर पवन हंस लिमिटेड के उच्च प्रबंध तंत्र से नागर विमानन मंत्रालय के माध्यम से संपर्क स्थापन के उपरांत पवन हंस की तरफ से हेलीकॉप्टर के रोहिणी स्थित हेलीपैड पर लैंडिंग से जुड़ी सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करने के लिए मुझे कार्य सौंपा गया था और उसी संबंध में आवश्यक जानकारी लेने के लिए फोन आया था।

हालांकि पवन हंस लिमिटेड के सिविल अभियंता के रूप में मुझे स्वयं पर पूरा विश्वास था कि मैं तय समय में सभी आवश्यक कार्य पूरा कर लूंगा, तथापि अति विशिष्ट दौरे के कारण उच्चाधिकारियों द्वारा पूरी निगरानी रख रहे होने के कारण मैं थोड़ा चिंताग्रस्त भी हो जाता था, तथापि कंपनी द्वारा प्रदत उक्त कार्य एक अविस्मरणीय घटना के रूप में मेरे जेहन में ताजा रहेगी। बल्कि सुखद संयोग ही कहूँगा कि माननीय नरेन्द्र मोदी जी के रोहिणी स्थित हेलीपोर्ट पर चुनावी दौरे के क्रम में आए होने के बाद हुए आम चुनाव के बाद वे भारत के प्रधानमंत्री बने।

उससे भी बड़ा सुखद संयोग यह रहा कि मुझे पवन हंस द्वारा भारत सरकार के नागर विमानन मंत्रालय द्वारा बनवाए जा रहे भारत के पहले हेलीपोर्ट के निर्माण कार्य के लिए प्रभारी अभियंता के रूप में कार्य निष्पादित करने हेतु नियुक्त किया गया।

भारत में हो रहे इस अभिनव निर्माण का साक्षी बनने की हसरत और सिविल क्षेत्र की चुनौतियों को पूरा करने के जुनून के कारण मैं और तत्परता से इस कार्य में जुड़ा। यद्यपि मैं कुछ नया अभिनव करने व भारत सरकार के समर्पित लोक सेवक के रूप में सामाजिक सरोकारों से जुड़े रहने की अपनी हार्दिक इच्छा के कारण पिछले वर्ष के दौरान उत्तर प्रदेश भूमि सुधार निगम में प्रतिनियुक्ति पर था। इस क्रम में लगभग एक वर्ष की

सेवा अवधि के दौरान उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य के अनुभव के पश्चात पूरे आत्मविश्वास से मैं पुनः पवन हंस लिमिटेड में आया और रोहिणी हेलीपोर्ट के निर्माण का कार्य मुझे सौंपा गया।

वस्तुतः रोहिणी सेक्टर-36 स्थित निर्माणाधीन रोहिणी हेलीपोर्ट नागर विमानन मंत्रालय की ओर से पवन हंस लिमिटेड द्वारा बनवाया जाने वाला भारत का प्रथम हेलीपोर्ट है। इस हेलीपोर्ट को व्यवस्तम इंदिरा गांधी एयरपोर्ट से दूर रोहिणी सेक्टर-36 नई दिल्ली में बनवाया जा रहा है। इस हेलीपोर्ट के बनने से निकट भविष्य में यात्री सेवाएं तदर्थ चार्टर सेवाएं, हेलीकॉप्टर की लैंडिंग और पार्किंग, हेलीकॉप्टर अनुरक्षण सेवाएं (एमआरओ) आपदा प्रबंधन, चिकित्सा निष्क्रमण, निगरानी गतिविधियां इत्यादि सुलभ हो जाएंगी।

इस हेलीपोर्ट के निर्माण के क्रम में निर्माण एवं विकास की सेवाएं प्रारंभ करने हेतु परामर्शी कार्य के लिए मेसर्स एजिस इंडिया कंसलटेंसी इंजीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड को कार्य सौंपा गया है। इसके साथ ही हेलीपोर्ट के निर्माण के लिए मेसर्स दिनेशचंद्र आर अग्रवाल इंफ्राकोन प्राइवेट लिमिटेड को कार्य सौंपा गया है। हेलीपोर्ट का निर्माण कार्य पूरे जोर शोर से चल रहा है। हम उम्मीद करते हैं कि अगले वित्तीय वर्ष की समाप्ति तक यह पूर्ण हो जाएगा।

हेलीपोर्ट की अवसंरचना का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

एफएटीओ- फाइनल एप्रोच एंड टेकऑफ, यात्री टर्मिनल भवन, वायु यातायात नियंत्रक (6-6 केबिन), हैंगर-(04), इलेक्ट्रिकल हाई साइड कार्य (ट्रांसफार्मर जनरेटर पैनल आदि), फायर बिल्डिंग, सूचना प्रणाली (आई टी)। फिलहाल निर्माण कार्य से जुड़ी कुछ झलकियों के माध्यम से ग्राउंड रियलिटी प्रस्तुत है। इनसे जुड़ी झलकियां हालांकि अनगढ़ सांचे सी प्रतीत होंगी, परन्तु मुझे विश्वास है कि रोहिणी रिपोर्ट के रूप में हंसध्वनि के अगले अंक में हेलीपोर्ट के विकास से जुड़ी अन्यत गतिविधियों को जब मैं साझा करूंगा तब आपको भारतीय विमानन क्षेत्र का एक नया सपना साकार रूप लेता दिखेगा।

विजय कुमार
अभियंता (सिविल)
एवं अभियंता (प्रभारी) रोहिणी हेलीपोर्ट परियोजना

अशुभ भी हो सकता है पैतृक मकान

वास्तु में सबसे ज्यादा मतांतर मुख्य द्वार को लेकर है। अक्सर लोग अपने घर का द्वार उत्तर या पूर्व दिशा में रखना चाहते हैं लेकिन समस्या तब आती है जब भूखंड के केवल एक ही ओर दक्षिण दिशा में रास्ता हो। वास्तु में दक्षिण दिशा में मुख्य द्वार रखने को प्रशस्त बताया गया है। आप भूखंड के 81 विन्यास करके आग्नेय से तीसरे स्थान पर जहां गृहस्थ देवता का वास है द्वार रख सकते हैं। द्वार रखने के कई सिद्धांत प्रचलित हैं जो एक दूसरे को काटते भी हैं।

ऐसे में असमंजस पैदा हो जाता है। ऐसी स्थिति में सभी विद्वान मुख्य द्वार को कोने में रखने से मना करते हैं। ईशान कोण को पवित्र मानकर और खाली जगह रखने के उद्देश्य से कई लोग यहां द्वार रखते है लेकिन किसी भी वास्तु पुस्तक में इसका उल्लेख नहीं मिलता है। दूसरी समस्या लेट-बाथ की आती है क्योंकि जहां लैट्रिन बनाना प्रशस्त है वहां बाथरूम बनाया जाना वर्जित है। यहां ध्यान रखना चाहिए कि जहां वास्तु सम्मत लैट्रिन बने, वहीं बाथरूम का निर्माण करें। यानी लैट्रिन को मुख्य मानकर उसके स्थान के साथ बाथरूम को जोड़ें। यहां तकनीकी समस्या पैदा होती है कि लैट्रिन के लिए सेप्टिक टैंक कहां खोदें, क्योंकि जो स्थान लैट्रिन के लिए प्रशस्त है वहां गड्ढा वर्जित है। ऐसे में आप दक्षिण मध्य से लेकर नैऋत्य कोण तक का जो स्थान है उसके बीच में अटैच लेटबाथ बनाएं और उत्तर मध्य से लेकर वायव्य कोण तक का जो स्थान है उसके बीच सेप्टिक टैंक का निर्माण कराएं। अक्सर लोग वास्तुपूजन को कर्मकांड कहकर उसकी उपेक्षा करते हैं। यह ठीक है कि वास्तुपूजन से घर के वास्तुदोष नहीं मिटते, लेकिन बिना वास्तुपूजन किए घर में रहने से वास्तुदोष लगता है। इसलिए जब हम वास्तुशांति, वास्तुपूजन करते हैं तो इस अपवित्र भूमि को पवित्र करते हैं। इसलिए प्रत्येक मकान, भवन आदि में वास्तु पूजन अनिवार्य है। कुछ व्यक्ति गृह प्रवेश से पूर्व सुंदरकांड का पाठ रखते हैं। वास्तुशांति के बाद ही सुंदरकांड या अपने ईष्ट की पूजा-पाठ करवाई जानी शास्त्र सम्मत है। फेंगशुई के सिद्धांत भारतीय वास्तुशास्त्र से समानता रखते हैं, वहीं कई मामलों में बिल्कुल विपरीत देखे गए हैं। भारतीय वास्तुशास्त्र को आधार मानकर घर का निर्माण या जांच की जानी चाहिए और जहां निदान की आवश्यकता हो वहां फेंगशुई के उपकरणों को काम में लेने से फायदा देखा गया है।

''वास्तु का प्रभाव हम पर क्यों होगा, हम तो मात्र किराएदार हैं''। ऐसे उत्तर अक्सर सुनने को मिलते हैं। यहां स्पष्ट कर दें वास्तु मकान मालिक या किराएदार में भेद नहीं करता है। जो भी वास्तु का उपयोग करेगा वह उसका सकारात्मक अथवा नकारात्मक फल भोगेगा। व्यक्ति पर घर के वास्तु का ही नहीं बल्कि दुकान कार्यालय, फैक्ट्री या जहां भी वह उपस्थित है उसका वास्तु प्रभाव उस पर पड़ेगा। घर में व्यक्ति ज्यादा समय गुजारता है। इसलिए घर के वास्तु का महत्व सर्वाधिक होता है। पड़ोसियों का घर भी अपना वास्तु प्रभाव हम पर डालता है।

''क्या मेरे लिए पैतृक मकान अशुभ हो सकता है''? इस संबंध में राय यह बनती है कि मात्र मकान के पैतृक होने से वह शुभदायक हो, यह कतई आवश्यक नहीं है। अधिकांशत व्यक्ति पुरखों की सम्पत्ति पर श्रद्धाभाव रखते हैं और इसी श्रद्धावश इसे शुभ मान बैठते हैं। वास्तु का प्रभाव व्यक्तिगत होता है। घर के प्रत्येक सदस्य पर इसका प्रभाव अलग-अलग पड़ता है। पुत्र उसी मकान में रहते हुए पिता का कर्ज उतार सकता है तो दूसरी ओर धनाढ्य पिता का पुत्र उसी में पाई-पाई का कर्जदार हो सकता है। प्रायः जब पैतृक सम्पत्ति का बंटवारा होता है तब पैतृक मकान जिस के हिस्से में आए उस पर प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जा सकता है। कई लोग घर के चारो ओर परिक्रमा को अशुभ मानते हैं। ऐसे में जब उन्हें कोई समस्या घेर लेती है तो सबसे पहले वे घर की परिक्रमा को रोकते है जो वास्तु नियमों के विरुद्ध है। घर में हम मंदिर रखते हैं और घर को मंदिर की उपमा भी देते हैं। वास्तुशास्त्र के अनुसार घर के चारों ओर परिक्रमा लगे तो यह अत्यंत शुभदायक है।

खरी कसौटी फीचर डेस्क

वर्ष 2015 के लिए राजपत्रित अवकाश

क्र.सं.	अवकाश	दिनांक	सप्ताह का दिन
01	गणतंत्र दिवस	26 जनवरी 2015	सोमवार
02	होली	06 मार्च 2015	शुक्रवार
03	महावीर जयंती	02 अप्रैल 2015	गुरुवार
04	गुड फ्राईडे	03 अप्रैल 2015	शुक्रवार
05	बुद्ध पूर्णिमा	04 मई 2015	सोमवार
06	स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त 2015	शनिवार
07	विनायक चतुर्थी/ गणेश चतुर्थी	17 सितम्बर 2015	गुरुवार
08	ईद-उल-जुहा (बकरीद)	25 सितम्बर 2015	शुक्रवार
09	महात्मा गांधी जन्म दिवस	02 अक्टूबर 2015	शुक्रवार
10	दिवाली (दीपावली)	11 नवम्बर 2015	बुधवार
11	गुरु नानक जन्म दिवस	25 नवम्बर 2015	बुधवार
12	मिलाद-उन-नबी/ ईद ए मिलाद	24 दिसम्बर 2015	गुरुवार

वर्ष 2015 के लिए प्रतिबंधित अवकाश

01	नववर्ष दिवस	01 जनवरी 2015	गुरुवार
02	मिलाद-उन-नबी या ईद ए मिलाद	04 जनवरी 2015	रविवार
03	मकर संक्रान्ति	14 जनवरी 2015	बुधवार
04	पोंगल	15 जनवरी 2015	गुरुवार
05	बसंत पंचमी (श्री पंचमी)	24 जनवरी 2015	शनिवार
06	गुरु रविदास जयंती	03 फरवरी 2015	मंगलवार
07	स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती	14 फरवरी 2015	शनिवार
08	महाशिवरात्रि	17 फरवरी 2015	मंगलवार
09	शिवाजी जयंती	19 फरवरी 2015	गुरुवार
10	होलिका दहन	05 मार्च 2015	गुरुवार
11	चैत्र शुक्लादि/गुड़ी पड़वा	21 मार्च 2015	शनिवार
12	रामनवमी	28 मार्च 2015	शनिवार
13	ईस्टर रविवार	05 अप्रैल 2015	रविवार
14	वैसाखी	14 अप्रैल 2015	मंगलवार
15	वैसाखादी (बंगाल)	15 अप्रैल 2015	बुधवार
16	हजरत अली का जन्म दिवस	03 मई 2015	रविवार
17	गुरु रवीद्रनाथ का जन्म दिवस	09 मई 2015	शनिवार
18	जमात-उल-विदा	17 जुलाई 2015	शुक्रवार
19	ईद-उल-फितर/रथ यात्रा	18 जुलाई 2015	शनिवार
20	पारसी नववर्ष दिवस	18 अगस्त 2015	मंगलवार
21	ओनम	28 अगस्त 2015	शुक्रवार
22	रक्षा बंधन	29 अगस्त 2015	शनिवार
23	जन्माष्टमी	05 सितम्बर 2015	शनिवार
24	दशहरा (महासप्तमी)	20 अक्टूबर 2015	मंगलवार
25	दशहरा (महासप्तमी)	21 अक्टूबर 2015	बुधवार
26	दशहरा (विजय दशमी)	22 अक्टूबर 2015	गुरुवार
27	मुहर्रम	24 अक्टूबर 2015	शनिवार
28	महर्षि बाल्मीकि जयंती	27 अक्टूबर 2015	मंगलवार
29	कर्क चतुर्थी (करवा चौथ)	30 अक्टूबर 2015	शुक्रवार
30	नरक चतुर्दशी	10 नवम्बर 2015	मंगलवार
31	गोवरधन पूजा	12 नवम्बर 2015	गुरुवार
32	भाई दूज	13 नवम्बर 2015	शुक्रवार
33	छठ पूजा	17 नवम्बर 2015	मंगलवार
34	गुरुतेग बहादुर शहीदी दिवस	24 नवम्बर 2015	मंगलवार
35	क्रिसमस	25 दिसम्बर 2015	शुक्रवार

राजभाषा नीति का बेस कार्यालय स्तर पर आवश्यक अनुपालन हेतु अनिवार्य जांच बिन्दु

1. क्या कार्यालय में उपस्थिति रजिस्टर में प्रत्येक माह स्टॉफ सदस्यों के नाम केवल हिंदी में/द्विभाषिक रूप में लिखे जा रहे हैं?
2. क्या कार्यालय में स्टाफ सदस्यों के हिंदी में प्रशिक्षण अथवा हिंदी कार्यशाला में भाग लिए जाने संबंधित जानकारी का रजिस्टर है?
3. क्या कार्यालय में कोई स्टाफ सदस्य है जिन्हें हिंदी में संभाषण अथवा लेखन अथवा संप्रेषण में समस्या आती है?
4. क्या उक्त स्टाफ सदस्य की जानकारी प्रधान कार्यालय को दी गई है?
5. क्या संगठन के नाम संबंधित साइन बोर्ड द्विभाषिक रूप में प्रदर्शित किया गया है?
6. क्या उपरोक्त कार्य में राजभाषा नीति का अनुपालन किया गया है? (प्रदर्शित सामग्री प्रथम हिंदी में एवं उसके बाद अंग्रेजी में)
7. क्या कार्यालय प्रमुख की नाम पट्टिका (नेम प्लेट) केवल हिंदी/द्विभाषित रूप में हैं?
8. क्या स्टाफ सदस्यों की नाम पट्टिका केवल हिंदी/द्विभाषिक रूप में बनायी गयी हैं?
9. क्या विभागों के नाम पट्ट अथवा नाम पट्टिका केवल द्विभाषिक रूप में प्रदर्षित किये गये हैं?
10. क्या उपयोग में लायी जा रही समस्त मुहरें केवल द्विभाषिक रूप में ही है? (नमूनास्वरूप मुहरों की छापयुक्त अभिलेख में रखें)
11. क्या उन द्विभाषित मुहरों की छाप लेकर उसका अभिलेख कार्यालय में रखा गया है?
12. क्या राजभाषा संबंधित कार्यनिष्पादन बाबत पिछले निरीक्षण की रिपोर्ट शाखा में उपलब्ध है?
13. क्या राजभाषा हिंदी संबंधित पत्राचार एवं तिमाही प्रगति रिपोर्ट की अलग से फाइल उपलब्ध है?
14. क्या राजभाषा हिंदी की फाइल में केवल हिंदी से संबंधित कागजात ही रखे जा रहे हैं?
15. क्या शाखा द्वारा तिमाही समाप्ति के पश्चात तिमाही प्रगति रिपोर्ट अंचल कार्यालय को निर्धारित समयावधि (तिमाही पश्चात 7 दिवस के भीतर) में प्रेषित की जाती है तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रेषित किए जाने के पूर्व क्या यह सुनिश्चित करते हैं कि रिपोर्ट के साथ संलग्न सूचनाओं का पालन किया जा रहा है? (नमूनास्वरूप तिमाही प्रगति की छायाप्रति अभिलेख में रखें)
16. क्या कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यरत है जिसके अध्यक्ष कार्यालय प्रमुख हैं? साथ ही नोडल अधिकारी (राजभाषा) के रूप में एक अधिकारी को नामित किया गया है। क्या नोडल अधिकारी (राजभाषा) अथवा समिति के सदस्य सचिव द्वारा प्रत्येक तिमाही में कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का नियमित आयोजन किया जा रहा है एवं बैठक के कार्यवृत्त नियंत्रण कार्यालय को प्रस्तुत किए जा रहे हैं?

17. क्या राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक के कार्यवृत्त का रजिस्टर बनाया गया है ?
18. क्या फाइलों एवं रजिस्टरों पर शीर्षक/नाम केवल द्विभाषिक रूप में लिखे जा रहे हैं ?
19. क्या फर्नीचरों/फिक्सचरों तथा वाहन पर संगठन का नाम एवं क्रमांक केवल हिंदी/द्विभाषिक रूप में लिखा गया है ?
20. क्या प्रधान कार्यालय द्वारा पूर्व में प्रेषित राजभाषा अनुदेश पुस्तिका उपलब्ध है ?
21. क्या राजभाषा हिंदी से संबंधित संदर्भ साहित्य अथवा शब्दकोष (हिंदी-अंग्रेजी एवं अंग्रेजी-हिंदी) कार्यालय में उपलब्ध है ?
22. क्या कार्यालय में हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दिए जा रहे हैं ?
23. क्या कार्यालय द्वारा हिंदी में पत्राचार की अलग से फाइल उपलब्ध हैं ?
24. क्या कार्यालय द्वारा हिंदी में प्राप्त पत्रों का रिकार्ड नियमित रूप से रखा जा रहा है ?
25. क्या स्टाफ सदस्यों के मध्य अथवा संगठन का प्रतिनिधित्व करते समय अथवा वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में हिंदी में चर्चा करने में अधिकारी अथवा स्टाफ सदस्य गौरव अनुभव करते हैं ?
26. क्या स्टाफ सदस्यों को हिंदी में काम किए जाने हेतु निरंतर प्रोत्साहित करते हैं ?
27. क्या स्टाफ सदस्यों को राजभाषा हिंदी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं में शामिल होने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है ?
28. क्या किसी स्टाफ सदस्य ने हिंदी में कोई विशिष्ट/सराहनीय उपलब्धि अर्जित की है ? (कृपया विवरण दें)
29. क्या किसी स्टाफ सदस्य को किसी हिंदी प्रतियोगिता विशेष में प्रवीणता प्राप्त है ?
30. क्या कंप्यूटर के माध्यम से हिंदी पत्राचार एवं वर्ड प्रोसेसिंग वाले अन्य कार्यों में यूनीकोड के प्रयोग का उपयोग किए जाने के संबंध में प्रयत्नशील हैं ?
31. क्या संगठन का पत्र शीर्ष (लेटर हेड) हिंदी अथवा द्विभाषिक हैं ?
32. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में (आमंत्रित किए जाने पर) स्वयं उपस्थित होने संबंधी अपने उत्तरदायित्व के प्रति क्या संगठन प्रमुख जागरूक हैं ?
33. क्या संगठन की योजनाओं संबंधित प्रचार-प्रसार सामग्री हिंदी अथवा द्विभाषिक रूप में प्रदर्शित की गई है ?
34. संगठन में ग्राहकों एवं स्टाफ सदस्यों के लिए पढ़ने हेतु लिए जाने वाले समाचार पत्र का नाम क्या है ? (----)
35. क्या संगठन में प्रधान कार्यालय द्वारा जारी राजभाषा अनुदेश पुस्तिका उपलब्ध है ?
36. क्या संगठन में राजभाषा हिंदी संबंधित संदर्भ साहित्य अथवा शब्दकोष उपलब्ध हैं ?
37. क्या राजभाषा अनुदेश पुस्तिका अथवा हिंदी संबंधित संदर्भ साहित्य अथवा शब्दकोष का उचित अभिलेख रखा गया हैं ?
38. क्या संगठन में हिंदी के प्रयोग की स्थिति की जानकारी अथवा हिंदी के प्रयोग में आ रही कठिनाइयों के संबंध में प्रधान कार्यालय के राजभाषा अधिकारी को अवगत कराया जाता है अथवा क्या उनसे सहयोग लिया जाता है ?

अतुल्य विविधताओ को कर एकजुट
पवन हंस बनाए भारत को अद्भुत

WE FLY FOR YOU

पवन हंस लिमिटेड
Pawan Hans Ltd.
(A Government of India Enterprise)
WE FLY FOR YOU
www.pawanhans.co.in